International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 14-12-2022, Accepted: 30-12-2022, Published: 16-01-2023
Volume 9, Issue 1, 2023, Page No. 19-20

वैदिक काल में नारी एवं उसकी सामाजिक स्थिति

डॉ. सत्येंद्र सिंह[1], शिवम् तिवारी[2]
[1] विभागाध्यक्ष, श्री रावतपुरा सरकार कॉलेज, झांसी, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] प्रवक्ता, श्री रावतपुरा सरकार कॉलेज, झांसी, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध में वैदिक काल में नारी (महिलाओ) की सामाजिक स्थति एवं उनकी समाज में भूमिका का अध्ययन किया गया हैं, स्पष्टतया समझा जा सकता हैं कि किसी भी देश का सर्वागीण विकास चाहे उसका मतलब सामाजिक विकास से हो या आर्थिक विकास से निर्भर करता हैं कि उस देश में नारियों की स्थिति पर उनके समाज में योगदान पर क्योंकि एक बच्चे का सर्वप्रथम शिक्षक उसकी माता ही होती हैं । आज के समाज में जहां एक ओर महिलाओ को अपने अधिकार की प्राप्ति हेतु संघर्षरत होना पड़ रहा हैं, आज के समय से हजारों वर्ष पूर्व के समाज मे नारी को पुरुषो के समान अधिकार प्राप्त थे, वैदिक काल के समय अर्द्धनारीश्वर रूप महिला और पुरुषों के समान अधिकारों और स्थिति को इंगित करता हैं एवं नारी आज के समाज की अपेक्षा सम्रद्ध समाज की ओर इशारा करता हैं अत यह कहना अतिशयोक्ति नही होगी कि यदि नारी को समाज में प्रत्येक स्तर पर समान स्थान मिले तो निश्चय ही हम एक सुसभ्य समाज का निर्माण करने में सक्षम होंगे, उक्त शोध के द्वारा हम वैदिक काल में नारी एवं उसकी सामाजिक स्थिति का अध्ययन करेंगें साथ ही सनातन वैदिक काल के तमान उद्धरण के द्वारा इस बात की पुष्टि करते हैं कि भारतीय समाज में नारियों को प्राचीन काल से ही अत्यंत सम्मानजनक स्थान प्राप्त हुआ हैं।

मूल शब्दः वैदिक काल में स्त्री का महत्व एवं उसकी प्रासंगिकता का अध्ययन, शिक्षा क्षेत्र में नारी की स्थिति, ऋग्वैदिक काल में नारी का ज्ञान, सार्वजनिक जीवन में स्त्री की भूमिका।

प्रस्तावना
भारतीय संस्कृति एवं उसके पुरातन काल के साहित्य के अध्ययन में देखा जा सकता हैं कि नारी की उन्नति उस समाज की दिशा तय करती हैं भारतीय संस्कृति सदैव ही यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता की भावना एवं इस सिद्धांत की अनुगामी हैं। भारतीय संस्कृति के उद्गम अर्थात प्राचीन काल से ही नारी का स्थान सर्वोच्च एवं सम्मानीय रहा हैं, संस्कृति का स्वर्णिम काल जिस समय का रचित साहित्य आज भी समूचे जगत को सोचने एवं उस पर चिंतन पर मजबूर कर देता है अर्थात वैदिक काल में नारी की महत्ता को देखा जा सकता हैं उस समय की विदुषी महिलाओ के ज्ञान एवं पुरूषो के साथ समान रूप से संस्कृति के उत्कर्ष में अग्रणी रही हैं। नारी की महत्ता का वर्णन करते हुये बृहदारण्यकोपनिषद् में लिखा हैं अयमाकाशरू स्त्रिया पूर्यते। अर्थात स्त्री सृष्टि की रिक्तता को पूर्ण करने वाली की संज्ञा दी गयी हैं। साथ ही तैत्तिरीय ब्राह्मण में नारी की महत्ता का वर्णन करते हुये लिखा हैं अयज्ञो वा एषः योऽपत्नीकः अर्थात पत्नी के बिना कोई भी यज्ञ एवं अनुष्ठान पूर्ण नही माना जा सकता हैं साथ ही वे आहुती जो पति देता हैं देवताओ के द्वारा पत्नी (यजमान की पत्नी) के अभाव में स्वीकार नही होती हैं।

उस काल के स्त्रोतो एवं साहित्य के अनुसार उस काल की महिलायें धार्मिक, सांस्कृतिक, कार्यक्रमों में पुरूषों की अपेक्षा अग्रणी रूप से हिस्सा लेती थी एवं अपने को ज्ञान की पराकाष्ठा की हर कसौटी पर खरा पाती थी। मानव जीवन को भारतीय दर्शन के अनुसार यदि वर्णित किया जाये तो कहा जा सकता हैं संपूर्ण जीवन की धुरी ज्ञान,धर्म एवं शांति इसमें शांति शब्द का स्त्रीवाचक होना समाज में स्त्री की महत्ता को वर्णित करता हैं साथ ही हिंदू धर्म में स्त्री को समृद्धि एवं संस्कृति का पोषक भी माना जाता हैं

ऋग्वैदिक काल में नारी की प्रतिभा एवं उनका ज्ञान अद्भुत था,नारी को पुरुषों की भांति ऋषि बनने का पूर्ण अधिकार था एवं वेदो के पूर्ण अध्ययन की भी अनुमति प्राप्त थी यहां तक कि कुछ महिलाओ ने तो वेदो में कुछ ऋचाओं की रचना भी की हैं जैसे सावित्री, अपाला, घोषा यामी, सरस्वती, सर्पराज्ञी, सूर्या, अदिति–दाक्षायनी, लोपामुद्रा, विश्ववारा, आत्रेयी आदि। वैदिक काल में स्त्रियों की शिक्षा का वर्गीकरण दो भागों मे किया गया हैं जिनमें पहला सधोवधू को एवं दूसरा ब्रह्मवादिनी को माना गया हैं, यहां पर सधोवधू के लिये कहा गया हैं वे स्त्रियां जो विवाह के पूर्व कुछ मंत्र, यज्ञ स्तुतियां,यज्ञ प्रार्थनाओ आदि का ज्ञान प्राप्त करती थी एवं ब्रह्मवादिनी के लिये कहा गया है वे स्त्रियां जो अपनी शिक्षा पूर्ण करने में अपना संपूर्ण जीवन व्यतीत कर देती थी ये अनेक मंत्रो एवं ऋचाओ की उदगात्री होती थी साथ ही दर्शन, तर्क, मीमांसा एवं साहित्यिक विषयों की पारंगत और विशेषज्ञ भी होती थी ये संपूर्ण जीवन ज्ञानार्जन करती थी एवं विवाह नही करती थी ब्रह्मवादिनी स्त्रियाँ वेदाध्ययन करतीं एवं त्याग, तपस्या के द्वारा ऋषिभाव प्राप्त करके मंत्रों का साक्षात्कार भी कर लेती थीं। ऋग्वेद के अनेक सूक्त महिलाओं ने साक्षात्कृत किए हैं, उदाहरणार्थ दृ घोषा, जुहु, वागवरिणी, जरीता, ऋद्धा, कामायनी, उर्वशी, शारंगा,यमी, इंद्राणी, देवयानी,नोद्या, की ऋषि रोमशा ऋग्वेद दशम मण्डल के 39, 40 वें सूक्त तपस्विनी ब्रह्मवादिनी घोषा के हैं और, 1.5.29 वें मंत्र की विश्वारा, 1.10.45 वें मंत्र की दृष्टा इन्द्राणी, 1.10.159 वें मंत्र की ऋषि अपाला, ऋग्वेद के 1.27.7 वे मंत्र की ऋषि रोमशा थीं साथ ही सामवेद में आकृष्टावासा, सिकता, गोपनाया आदि ब्रह्मवादिनी का उल्लेख प्राप्त होता हैं।

शिक्षक के रूप में नारी ने अपनी द्वारा ज्ञान का प्रसार किया हैं, वैदिक काल के एतरेय ब्राह्मण एवं कोषितकी ब्राह्मण से जानकारी मिलती है कि नारी शिक्षक के रूप में भी सम्मान प्राप्त करती थी एवं ज्ञान के संचार करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन करती थी आश्वालायन ग्रहसूत्र से विदुषी महिला अर्थात वे विद्वान नारी जिन्होने ज्ञान प्राप्त कर ज्ञान का संचार शिक्षिका बनकर किया हैं तीन विदुषी शिक्षिकाओ का वर्णन प्राप्त होता हैं बड़वा,वाचक्नवी, एवं गार्गी। इन्हें उपाध्याया भी कहा जाता था। उस काल में

स्त्रियों को शिक्षा प्रदान करने के लिये छात्राशाला का वर्णन मिलता हैं पतंजलि के द्वारा औद्यमेद्या आचार्य का उल्लेख प्राप्त करने वाली छात्रायें औदमेघा कहलाती थी।

कार्यों में दक्षता को वर्णित करता वैदिक साहित्य, स्पष्ट रूप से देखा जा सकता हैं कि ज्ञान में सम्मानजनक एवं ललित कलाओ में पारंगत होने के साथ साथ उस काल में कृषि कार्य स्त्रियों के सहयोग करने का वर्णन भी प्राप्त होता हैं पूर्व वैदिक काल में वर्णित हैं कि अपाला ने कृषि कार्य कर रहे अपने पिता का सहयोग किया। वैदिक काल में स्त्रियों के अन्य कार्य में भी पारंगत होने के साक्ष्य प्राप्त होते हैं उस काल में कन्यायें / स्त्रियां अपना सर्वागीण विकास करने हेतु तत्पर रहती थी, स्त्रियां नृत्य कला एवं वैदिक ऋचाओ का सस्वर वाचन करती थी जिससे श्रवणो को रसास्वादन की अनुभूति होती थी साथ ही स्त्रियां सूत काटना,कपड़े बुनना एवं अन्य कार्यों में भी दक्ष थी, ग्रथो के अध्ययन से ज्ञात होता हैं कि उस समय की नारियों की स्थिति समाज में सम्मानजनक एवं उन्नित थी।

आर्थिक रूप से भी नारी सामर्थ्यवान थी, तैतरीय ब्राह्मण में वर्णित हैं पत्नी वै पारिणाह्यस्य ईशः । अर्थात वह बस्तु जो भेंट के रूप में नारी को प्राप्त हो रहा हैं उन बस्तुओ पर नारी का पूर्ण अधिकार है। नारी को सम्पत्ति के अनेक अधिकार प्राप्त थे, विवाह के समय पति के द्वारा यह कहा जाता था कि वह आर्थिक रूप से किसी भी प्रकार अपनी पत्नी के अधिकार एवं उसके हित पर अतिक्रमण नही करेगा,सामाजिक जनों इष्टों द्वारा प्राप्त होने वाले उपहारों पर केवल उसी स्त्री का एकाधिकार था, इनके आधार पर कहा जा सकता हैं कि वैदिक काल में नारी आर्थिक रूप से भी सामर्थ्यवान थी। अथर्ववेद में विधवा स्त्री हेतु धन की व्यवस्था का उल्लेख मिलता हैं, साथ ही वे कन्यायें जो विवाह नही करती थी और अपने पिता के घर में जावन यापन करती थी उनके लिये उनके पिता की सम्पत्ति में अधिकार ऋग्वेद की ऋचा 10. 85.13 में मिलता हैं ।

वैदिक काल मे युद्ध भूमि में नारी का वर्णन मिलता हैं, ऋग्वेद के दशम मण्डल के 10.102.2 स्थीरभून्मुद्गलानी गविष्टौ भरे, के माध्यम से नारीयों के युद्ध भूमि में जाने एवं युद्ध का वर्णन प्राप्त होता हैं महर्षि मुदगल की पत्नी का अपने पति के साथ युद्ध भूमि में जाना एवं अपने शौर्य एवं पराक्रम से सभी को अभिभूत करने का वर्णन प्राप्त होता हैं ।

सामाजिक रूप से उस समय पर्दा प्रथा का प्रचलन नही दिखता हैं,समारोहो, विवाह, धार्मिक सभाएं, उत्सवों एवं अन्य गोष्ठियों कार्यक्रमों जहां पर लोग एकत्रित होते थे एवं अपने विचारो का आदान प्रदान करते थे वहां पर कोई पर्दा का प्रचलन नही था, अथर्ववेद (9.5.18) में वर्णित हैं ब्रह्मचर्णेय कन्या युवानं विन्दते पतिम। अर्थात नवविवाहिता वधू को देखने एवं उसे आशीर्वाद देने को कहा गया।ऋग्वेद के 10.89.33 से ज्ञात होता हैं कि सामाजिक रूप से नारी को स्वयंवर करने के अधिकार प्राप्त थे जो नारी की स्वतंत्रता एवं यह भी दर्शाता हैं कि नारी के पर्दा प्रथा जैसी कोई प्रथा का चलन नही था।

निष्कर्ष

वैदिक काल में नारी एवं तात्कालीन समाज के अध्ययन से यह ज्ञात होता हैं कि उस समय नारी को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त थे एवं तात्कालीन समाज में वे अग्रणी थी एक ओर जहां आधुनिक समाज और स्वतंत्रता प्राप्ति के इतने वर्ष बाद भी हम पुरूष एवं स्त्री के बीच की खाई नही पाट पाये और वहीं दूसरी ओर हम हजारों साल के पूर्व वैदिक काल को देखे जो आज के समाज से कई गुना समृद्ध एवं आदर्श समाज हैं, उपरोक्त अध्ययन से ज्ञात होता हैं आज से हजारो साल पहले का वैदिक काल समाज आदर्श एवं प्रगतिशील समाज था और उस समाज का ध्येय था ज्ञान की अलख जगाना और उससे चहुओर अज्ञानता रूपी अंधकार को मिटाना। इसके साथ ही वैदिक काल के अध्ययन से परिलक्षित होता है कि तात्कालीन नारी भी अपने उत्थान एवं अपने विकास हेतु संकल्पबद्ध थी साथ ही उस समय सामाजिक उन्नति भी उसी में ही निहित हैं।

यह कहना गलत नही होगा कि नारी के उत्थान के माध्यम से ही समाज को नई दिशा एवं उसी दिशा में भारत का उज्ज्वल भविष्य भी पूर्णतया निहित है ।

संदर्भ सूची

1. ऋग्वेद
2. अथर्ववेद
3. सामवेद
4. श्री सुशील कुमार शर्मा (वेदो में नारी की भूमिका) साहित्य कुंज आलेख, अंक 149 प्रथम 2020 में प्रकाशित
5. कालीशंकर भटनागरः भारतीय संस्कृति का इतिहास
6. डा. ऋतु शुक्ला, वैदिक काल में नारी अधिकार
7. ऐतरेय ब्राह्मण
8. तैतरीय ब्राह्मण
9. शतपथ ब्राह्मण